सम्पादकीय

विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित मासिक शोध पत्रिका का दशम पुष्प आपके कर कमलों में अर्पित करते हुए अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। भारतीय धर्म-संस्कृति के शोध लेखों का यह संग्रह विद्वानों द्वारा सराहा जा रहा है। विद्वानों द्वारा नियमित भेजे जा रहे शोधलेख हमारा मनोबल बढ़ा रहे हैं व पत्रिका के महत्त्व को भी आलोकित कर रहे हैं। पूर्व अंकों में सभी उच्चस्तरीय विद्वानों के लेख प्रकाशित हुए हैं व शोध संस्थान द्वारा आयोजित किये गये कार्यक्रमों के चित्र सहित विवरण प्रकाशित किया गया है।

इस अंक में सर्वप्रथम देवर्षि कलानाथ शास्त्री का 'पितृदेवो भव' लेख पिता-पुत्र के सम्बन्धों की सूक्ष्ममूढता के माध्यम से सामाजिक उन्नयन हेतु आत्मीय संबंधों की अनिवार्यता को प्रतिपादित करता है। इसके पश्चात् डॉ. दयाराम स्वामी का 'संत शिरामणि दादूजी का साधना' है, तत्पश्चात् 'वैदिक पृष्ठभूमि में शिक्षक और शिष्य' शीर्षक गोपीनाथ पारीक के शोधलेख में गुरुशिष्य परम्परा के यथार्थ को उपस्थापित करते हुए उसके औचित्य के प्रति प्रेरणा प्रदान की गयी है। डॉ. अरविन्द कुमार द्वारा 'मन्वन्तर निर्धारण' लेख में पुराणोक्त मन्वन्तर विषयक जानकारी का विशद प्रस्तुतिकरण किया गया है। 'प्रकृते: सन्देशा:' डॉ. ओमप्रकाश पारीक की कविता प्राकृतिक उपादानों से ग्राह्य शिक्षा की मानवजीवन के लिए उपयोगिता को दर्शाती है। 'परमपूज्य परमहंस स्व. श्री सेवाराम महाराज' शीर्षक डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा के लेख में संत शिरोमणि सेवाराम जी के व्यक्तित्व के प्रेरणादायी स्वरूप का चित्रण स्तुत्य है।

प्रो. कैलाश चतुर्वेदी द्वारा लिखित 'श्राद्धविज्ञान' लेख श्राद्ध के परम्परागत स्वरूप की महत्ता एवं आधुनिक दृष्टि से उसकी उपादेयता को स्पष्ट करता है। डॉ. देवेन्द्र कुमार शर्मा के लेख 'ऑफलाइन बनाम ऑनलाइन शिक्षण पद्धतियाँ' शिक्षा के परम्परागत एवं आधुनिक बदलते स्वरूप का तुलनात्मक प्रस्तुतिकरण करते हुए युगानुकूल सन्दर्भ में शिक्षा के स्वरूप के प्रति जागरूकता हेतु अपेक्षित प्रतीत होता है। इस प्रकार इस अंक में विशिष्ट विद्वज्जनों के लेख समाज संस्कृति शिक्षा एवं धर्म के विषय में भ्रान्तिनिवारण के साथ साथ मानवमात्र के लिए प्रेरणास्रोत है। आशा है सुधी पाठक इन्हें रूचिपूर्व हृदयंगम करने में अपना उत्साह पूर्ववत् बनाये रखेंगे।

शुभकामनाओं सहित....

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा